Dated 14/8/2020

B.A Part - 1 (H & Subsi) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

सांख्य दर्शन में पुरुष की अवधारणा

Ans:→ जिस सत्ता को भारतीय दर्शनों में आत्मा कहा गया है उसी सत्ता को सांख्य ने अपने दर्शन में पुरुष की संज्ञा दी है। सांख्य दर्शन पुरुष की सत्ता को स्वयं सिद्ध मानता है। पुरुष शुद्ध चैतन्य है द्रष्टा है ज्ञाता है कार्य-कारण शृंखला से मुक्त है, अपरिवर्तनशील है, दिक्-काल की सीमा से परे, नित्य है, सुख-दुःख, पाप-पुण्य आदि से रहित है। सांख्य पुरुष को चैतन्य माना है। अर्थात चेतना आत्मा का गुण नहीं स्वभाव है। चैतन्यता आत्मा का स्वरूप माना गया है। सांख्य दर्शन में पुरुष की सत्ता को सिद्ध करने के लिए ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका -17 में लिखा भी है: —

" संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादि विपर्ययादधिष्ठानात् ।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च ॥ "

सांख्य के अनुसार पुरुष की संख्या अनेक मानी गई है। यानि जितने जीव हैं इस संसार में हैं उतनी ही आत्माएं भी हैं। गुण की दृष्टि से सभी आत्माएं समान हैं, पर परिणाम की दृष्टि से वे भिन्न-भिन्न हैं। सांख्य का यह सिद्धांत अनेकात्मवाद कहलाता है। सांख्य आत्मा की अनेकता सिद्ध करने के लिए सांख्यकारिका 18 में की लिखा भी है:-

जनन-मरण-करणानां प्रतिनियमादयुगपत् प्रवृत्तेश्च ।
पुरुष बहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव ।" अर्थात प्रकृति और पुरुष के संयोग से ही सर्ग होता है। प्रकृति अचेतन और अंध है, किन्तु सक्रिय माना गया है; पुरुष चेतन और द्रष्टा है परंतु पंगु और निष्क्रिय माना गया है। दोनों विपरीत गुणों का मिलन ही सृष्टि का कारण है।